



ISSN Print: 2664-8679
 ISSN Online: 2664-8687
 Impact Factor: RJIF 8.33
 IJSH 2025; 7(2): 284-286
www.sociologyjournal.net
 Received: 19-07-2025
 Accepted: 22-08-2025

अमर सिंह

शोधछात्र, समाजशास्त्र विभाग,
 काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी,
 उत्तर प्रदेश, भारत

काशी की धार्मिक संस्कृति और सामाजिक समरसता का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

अमर सिंह

DOI: <https://www.doi.org/10.33545/26648679.2025.v7.i2d.214>

सारांश

काशी भारतीय धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन का एक अनूठा केंद्र है। इसे धर्मनगरी भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ विभिन्न धार्मिक परंपराएँ यथा हिंदू, बौद्ध, जैन, सिख और मुस्लिम आदि सदियों से सह-अस्तित्व में रही हैं। प्रस्तुत लेख काशी की धार्मिक संस्कृति तथा सामाजिक समरसता का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है जिसमें धार्मिक स्थलों, साधु-संन्यासी परंपराओं, लोकसंस्कृति एवं त्योहारों के माध्यम से उत्पन्न सामूहिक चेतना का अध्ययन किया गया है। काशी में नागा, रामानंदी, औघड़ और निर्गुण संत परंपराएँ सामाजिक एकता, नैतिक अनुशासन, सेवा भाव के माध्यम से स्थायी सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक हैं। यहाँ होने वाली गंगा आरती, देव दीपावली, रामलीला एवं अन्य उत्सव न केवल धार्मिक अनुष्ठान हैं अपितु जाति, वर्ग और पंथ के पार सामूहिक सहभागिता और सह-अस्तित्व की भावना को सशक्त करते हैं। आधुनिक युग में शहरीकरण, राजनीतिक ध्रुवीकरण और धार्मिक पर्यटन के बाजारीकरण जैसी चुनौतियों के बावजूद काशी में पारंपरिक सहिष्णुता तथा आधुनिक नागरिक मूल्यों का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। शिक्षा, संवाद और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के माध्यम से सामाजिक समरसता को पुनर्स्थापित किया जा सकता है। इस लेख से यह स्पष्ट होता है कि काशी की धार्मिक विविधता केवल आध्यात्मिक महत्त्व नहीं रखती अपितु यह सामाजिक स्थिरता, सह-अस्तित्व और सांस्कृतिक एकता का जीवंत उदाहरण है।

कुटशब्द: काशी, धार्मिक संस्कृति, सामाजिक समरसता, साधु-संन्यासी परंपरा, लोकसंस्कृति, सहअस्तित्व

प्रस्तावना

काशी, जिसे वाराणसी और बनारस के नाम से भी जाना जाता है भारतीय सभ्यता की सबसे प्राचीन तथा निरंतर जीवित नगरियों में से एक है। इसे 'धर्मनगरी' कहा जाता है क्योंकि यहाँ धर्म, दर्शन एवं संस्कृति का अनूठा संगम देखा जा सकता है। गंगा तट पर स्थित यह नगरी हिंदू धर्म की पवित्रता मात्र का प्रतीक नहीं है अपितु बौद्ध, जैन, सिख और इस्लामी परंपराओं के भी सहअस्तित्व का केंद्र रही है। प्राचीन काल से ही काशी तीर्थ, ज्ञान, साधना और मोक्ष की भूमि मानी जाती है जहाँ संतों, दार्शनिकों और विद्वानों ने सामाजिक-धार्मिक चिंतन को नई दिशा प्रदान की। यहाँ स्थित विश्वनाथ मंदिर, संकटमोचन, कबीरचौरा और सारनाथ जैसे स्थलों ने इस नगर को विविध आध्यात्मिक अनुभवों का संगम बनाया। प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य काशी की धार्मिक विविधता के बीच विद्यमान सामाजिक समरसता की उस परंपरा को समझना है जिसने इसे 'एकता में विविधता' का जीवंत उदाहरण बनाया। यद्यपि यहाँ अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, जातियों आदि के अनुयायी रहते हैं तथापि सामंजस्य, सहयोग एवं सह-अस्तित्व की भावना इस समाज की विशेषता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह लेख इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाता है कि धार्मिक आस्थाएँ किस प्रकार सामाजिक संरचना को सुदृढ़ बनाती हैं और किस तरह संस्कृति, रीति-रिवाज तथा सामूहिक स्मृतियाँ सामाजिक एकता को बनाए रखने में योगदान करती हैं। काशी का धार्मिक जीवन केवल पूजा-पाठ अथवा आस्था तक सीमित नहीं अपितु यह एक ऐसा सांस्कृतिक ताना-बाना है जहाँ सामाजिक व्यवहार, मूल्य और नैतिकता एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। अतः काशी की धार्मिक संस्कृति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण न केवल उसकी परंपरा की व्याख्या करता है बल्कि आधुनिक भारत में सामाजिक समरसता के आदर्श की पुनर्स्थापना हेतु भी एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है।

काशी की धार्मिक विरासत का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

काशी की धार्मिक विरासत न केवल इसकी प्राचीनता का प्रतीक है अपितु यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक एकता, धार्मिक सहिष्णुता के साथ ही सामाजिक संगठन की निरंतरता का सजीव उदाहरण भी है। काशी के धार्मिक स्थल यथा विश्वनाथ मंदिर, संकटमोचन मंदिर, कबीरचौरा और सारनाथ आदि प्रत्येक एक विशिष्ट धार्मिक अनुभव का केंद्र हैं जो समाज के भीतर सामूहिकता एवं आध्यात्मिक चेतना का निर्माण करते हैं।

Corresponding Author:

अमर सिंह

शोधछात्र, समाजशास्त्र विभाग,
 काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी,
 उत्तर प्रदेश, भारत

विश्वनाथ मंदिर जहाँ शिव भक्ति के साथ ही वैदिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है तो वहीं संकटमोचन मंदिर भक्ति आंदोलन की भावनात्मक धार्मिकता का प्रतीक है। कबीरचौरा संत कबीर की निर्गुण भक्ति परंपरा का केंद्र है जिसने जाति-पंथ से परे एक समावेशी धर्म की अवधारणा दी। वहीं सारनाथ वह पवित्र स्थल है जहाँ गौतम बुद्ध ने अपने प्रथम धर्मचक्र प्रवर्तन से करुणा, अहिंसा और समता का संदेश दिया जो मानवता की सार्वभौमिकता को रेखांकित करता है। इन स्थलों के माध्यम से काशी एक ऐसी जीवंत प्रयोगशाला के रूप में सामने आती है जहाँ हिंदू, बौद्ध, जैन, सिख, मुस्लिम आदि परंपराएँ सदियों से सहअस्तित्व में हैं। यह विविधता किसी प्रतिस्पर्धा का नहीं अपितु सह-अस्तित्व, परस्पर आदान-प्रदान का प्रतीक है जिसे स्थानीय जीवन में 'गंगा-जमुनी तहजीब' के रूप में जाना जाता है। यहाँ धार्मिकता केवल मंदिरों या मस्जिदों तक सीमित नहीं बल्कि लोकजीवन की प्रत्येक परत में समाहित है यथा त्योहारों, मेलों, लोकगीतों, व्यवहारों, सामाजिक संबंधों में धर्म की उपस्थिति निरंतर बनी रहती है। इस तरह धर्म काशी के सामाजिक जीवन का वह ढाँचा है जो लोगों के सामूहिक व्यवहार, मूल्यों के साथ एकजुटता को आकार प्रदान करता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखें तो एमिल दुर्खाइम के अनुसार धर्म सामाजिक एकता का साधन है, जो सामूहिक चेतना को मजबूत करता है; काशी की धार्मिक परंपराएँ इसी सामूहिक एकता का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। वहीं मैक्स वेबर के विचार में धर्म समाज के आर्थिक-नैतिक व्यवहारों को दिशा देता है, काशी में देखा जा सकता है कि धार्मिक आस्था के साथ नैतिक अनुशासन, सेवा-त्याग की भावना कैसे जुड़ी है। भारतीय समाजशास्त्री एन.के. बोस ने धर्म को भारतीय समाज की संरचनात्मक निरंतरता का आधार माना है; काशी में यह निरंतरता लोकपरंपराओं, आस्था और सांस्कृतिक व्यवहारों में स्पष्ट दिखाई देती है। इस प्रकार काशी की धार्मिक विरासत केवल आस्थाओं का संग्रह नहीं, एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जो विविधता के बीच एकता का भाव उत्पन्न करती है, समाज को नैतिक दिशा देती है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्म को सामाजिक अनुभव के रूप में पुनः स्थापित करती है।

साधु-संन्यासी परंपरा और सांस्कृतिक निरंतरता

काशी की साधु-संन्यासी परंपरा इसकी सांस्कृतिक पहचान एवं सामाजिक जीवन की आत्मा कही जा सकती है। यहाँ नागा, रामानंदी, औघड़, निर्गुण संत परंपराएँ न केवल धार्मिक आस्था की विविधता का प्रतिनिधित्व करती हैं बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक निरंतरता की वाहक भी हैं। नागा संन्यासी परंपरा शैव मठों से जुड़ी हुई है जो तप, अनुशासन एवं शारीरिक-सांस्कृतिक बल का प्रतीक मानी जाती है। उन्होंने बाह्य आडंबरों से रहित किन्तु कठोर साधना के माध्यम से धर्म की रक्षा और समाज में नैतिकता के संरक्षण का कार्य किया। वहीं रामानंदी परंपरा जो वैष्णव भक्ति की एक प्रमुख शाखा है, रामभक्ति के माध्यम से प्रेम, सेवा का संदेश देती रही है। काशी के हनुमान मठ, पंचगंगा घाट के श्रीमठ तथा संत तुलसीदास से संबंधित स्थलों ने इस भक्ति परंपरा को जीवित रखा है। औघड़ या अघोरी संप्रदाय जिनकी उपस्थिति काशी के श्मशान घाटों में देखी जाती है, जीवन और मृत्यु के द्वंद्व से परे जाकर अध्यात्म की सर्वग्राही दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। ये परंपराएँ समाज में भय, तिरस्कार एवं निषिद्धताओं के पार जाकर एक वैकल्पिक आध्यात्मिक चेतना को जन्म देती हैं। इसी प्रकार निर्गुण संत परंपरा खासकर कबीर, रैदास और दादू जैसे संतों द्वारा जाति, कर्मकांड और पाखंड के विरोध के माध्यम से समानता और सामाजिक समरसता की नींव रखी। कबीरचौरा, रैदास मठ और संत सभा जैसे केंद्र आज भी इस विरासत को जीवित रखे हुए हैं। काशी के आश्रमों और मठों ने इस विविध साधु-संन्यासी परंपरा को संस्थागत रूप दिया है। ये न केवल आध्यात्मिक साधना के केंद्र हैं अपितु समाज के गरीब, पीड़ित और हाशिए पर स्थित वर्गों के लिए सहयोग, शिक्षा और सेवा के स्थल भी हैं। धर्म और समाज के बीच संवाद की यह परंपरा काशी में सदियों से बनी रही है जहाँ- गुरुशिष्य संबंध, सत्संग, प्रवचन आदि के माध्यम से धार्मिक मूल्यों का सामाजिक प्रसार हुआ। इस संवाद ने धर्म को स्थिर नहीं बल्कि गतिशील प्रक्रिया के रूप में स्थापित किया। अतः काशी की साधु-संन्यासी परंपरा तपस्या या मोक्ष की खोज मात्र नहीं बल्कि यह सामाजिक एकता, नैतिक अनुशासन और सांस्कृतिक निरंतरता का वह ताना-

बाना है जिसने काशी को 'जीवित संस्कृति का नगर' बनाए रखा है।

उत्सव, लोकसंस्कृति तथा सामाजिक एकता

काशी की लोकसंस्कृति और धार्मिक उत्सव उसकी सामाजिक एकता एवं सामूहिक चेतना के महत्वपूर्ण आधार हैं। यह नगर अपने अनगिनत त्योहारों और धार्मिक आयोजनों हेतु प्रसिद्ध है जो न केवल धार्मिक श्रद्धा का प्रदर्शन करते हैं अपितु सामाजिक समरसता तथा सामूहिक सहभागिता की भावना को भी प्रबल करते हैं। गंगा आरती इसका उत्कृष्ट उदाहरण है हर शाम दशाश्वमेध घाट, अस्सी घाट आदि पर होने वाली यह आरती केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, सामूहिक आस्था का प्रतीक है जहाँ प्रत्येक जाति, वर्ग और धर्म का व्यक्ति एक साथ बैठकर गंगा मैया की आराधना करता है। इसी प्रकार देव दीपावली का पर्व, जब सम्पूर्ण घाट दीपों से जगमगा उठते हैं, यह दर्शाता है कि कैसे धार्मिक आस्था सामुदायिक सौहार्द-सहयोग का माध्यम बनती है। रामनगर की प्रसिद्ध रामलीला जो तुलसीदास द्वारा प्रारंभ एवं *रामचरितमानस* पर आधारित है काशी की सांस्कृतिक धरोहर है। यह केवल धार्मिक नाट्य भर नहीं बल्कि सामूहिक श्रम, सहभागिता के साथ ही सांस्कृतिक अनुशासन का प्रतीक है। वहीं नागनाथैया लीला, कृष्ण की लीला के माध्यम से समाज में नैतिकता, भक्ति, एकता का संदेश देती है। काशी की लोकसंस्कृति में भजन, लोकगीत, आल्हा, बिरहा एवं कथा परंपरा जैसे लोकसंगीत रूप धार्मिक सहिष्णुता एवं सामाजिक सामंजस्य के वाहक हैं। काशी में कबीर, रैदास, तुलसीदास जैसे संतों की वाणी लोकजीवन में गूँजती रही है जो जाति-पंथ की सीमाओं को पार करती है। कथा-कीर्तन और अखंड रामायण पाठ जैसे आयोजनों में हर समुदाय के लोग सहभागिता करते हैं जिससे सामाजिक संपर्क एवं आपसी विश्वास का वातावरण बनता है। काशी के घाटों, गलियों और मोहल्लों में संस्कृति एक 'जीवित संवाद' के रूप में कार्य करती है जो धर्म को सामाजिक व्यवहार में रूपांतरित करती है। यहाँ के त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान भर नहीं अपितु सामाजिक संरचना को जोड़ने वाले धागे हैं जिनसे काशी की विविधता में एकता की भावना लगातार पोषित होती रही है। संस्कृति के माध्यम से जातीय-धार्मिक सीमाओं का अतिक्रमण काशी की सबसे बड़ी पहचान है यथा जहाँ मुसलमान कारीगर हिंदू मंदिरों के दीपक और पूजा सामग्री बनाते हैं, इस प्रकार काशी के उत्सव और लोकसंस्कृति धार्मिकता को जीवन के हर स्तर पर सामाजिक एकता के रूप में मूर्त रूप देते हैं जिससे यह नगर 'आध्यात्मिकता और समाज' के संतुलन का जीवंत उदाहरण बन जाता है।

धार्मिक विविधता एवं सहअस्तित्व का ताना-बाना

काशी की धार्मिक विविधता और सहअस्तित्व का ताना-बाना भारतीय संस्कृति की उस गहराई का प्रतीक है जिसमें भिन्न आस्थाएँ-परंपराएँ एक-दूसरे से टकराने के बजाय संवाद एवं सहयोग के माध्यम से विकसित हुई हैं। इतिहास साक्षी है कि काशी में हिंदू, मुस्लिम, सिख, जैन और बौद्ध परंपराएँ समान रूप से विकसित हुईं और एक-दूसरे को प्रभावित करती रहीं। मुगल काल में काशी में अनेक मंदिर और मस्जिदें साथ-साथ अस्तित्व में थीं और दोनों समुदायों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान निरंतर चलता रहा। संत परंपरा के कबीर, रैदास और मलिक मुहम्मद जायसी जैसे भक्त कवियों ने धार्मिक सीमाओं को तोड़कर एक ऐसी भाषा और चेतना प्रदान की जो सभी के लिए समान थी। कबीर की वाणी "हमन है इश्क मस्ताना" या "मोको कहाँ ढूँढे रे बंदे" आध्यात्मिक अभिव्यक्ति मात्र नहीं अपितु सामाजिक सहिष्णुता का भी प्रतीक है। इसी प्रकार गुरु नानकदेव का काशी आगमन तथा स्थानीय साधुओं के साथ उनका संवाद धर्मों के बीच वैचारिक एकता के ऐतिहासिक उदाहरण हैं। काशी की पहचान गंगा-जमुनी तहजीब से जुड़ी हुई है जो धार्मिक विविधता के समाजशास्त्रीय संतुलन का प्रतीक है। यह तहजीब केवल सह-अस्तित्व की नहीं बल्कि साझे जीवन और सामूहिक सांस्कृतिक निर्माण की प्रक्रिया है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह एक प्रकार का *सांस्कृतिक समेकन* (Cultural Integration) है जिसमें विभिन्न धार्मिक समूह अपनी विशिष्टता बनाए रखते हुए भी एक साझा सामाजिक जीवन जीते हैं। त्योहारों, संगीत, कला, खान-पान और पारिवारिक संबंधों में यह समेकन स्पष्ट दिखाई देता

है। उदाहरणतः बनारस की मशहूर बनारसी साड़ी का उद्योग हिंदू बुनकरों और मुस्लिम कारीगरों के सहयोग से चलता है जो आर्थिक-सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। आधुनिक समय में धार्मिक संवाद और सामाजिक समरसता के नए रूप शिक्षा, सांस्कृतिक मंचों और अंतरधार्मिक संगोष्ठियों में दिखाई देते हैं। विश्वविद्यालयों, सामाजिक संस्थाओं और स्थानीय संगठनों द्वारा 'धर्म संवाद' और 'सांप्रदायिक सौहार्द्र सभाओं' के आयोजन इस परंपरा को आधुनिक रूप में आगे बढ़ा रहे हैं। सारनाथ आज भी वैश्विक बौद्ध समुदाय का केंद्र है जहाँ से अहिंसा, करुणा और मानवतावाद के मूल्य प्रसारित होते हैं। वहीं कबीरपंथ आज भी सामाजिक समानता एवं धार्मिक एकता का संदेश जन-जन तक पहुँचाता है। इस प्रकार काशी की धार्मिक विविधता केवल इतिहास की देन नहीं अपितु एक जीवित सामाजिक प्रक्रिया है जो धार्मिक सहिष्णुता, परस्पर सम्मान और मानवीय एकता की भावना को निरंतर सशक्त करती है।

आधुनिक चुनौतियाँ और धार्मिक सहिष्णुता की आवश्यकता

आधुनिक युग में काशी जैसी प्राचीन धार्मिक नगरी अनेक नई सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रही है जिनका प्रभाव इसकी धार्मिक समरसता पर भी पड़ रहा है। शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि और राजनीतिक हस्तक्षेप ने पारंपरिक धार्मिक जीवन के ढाँचे को बदल दिया है। तीव्र नगरीकरण के कारण न केवल सामाजिक संबंधों की आत्मीयता घट रही है अपितु धार्मिक स्थलों के आसपास व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा और भूमि विवाद जैसी समस्याएँ भी उभर रही हैं। राजनीति के क्षेत्र में धर्म का प्रयोग सत्ता-संवर्द्धन के साधन के रूप में होने लगा है जिससे साम्प्रदायिक तनाव और सामाजिक विभाजन की स्थिति उत्पन्न होती है। ऐसे समय में जहाँ धर्म समाज को जोड़ने का माध्यम होना चाहिए वह कई बार विभाजन का उपकरण बन जाता है। काशी जो सदियों से गंगा-जमुनी तहजीब और धार्मिक सह-अस्तित्व का प्रतीक रही है अब धीरे-धीरे बाजारवादी संस्कृति और धार्मिक पर्यटन के प्रभाव में अपने पारंपरिक स्वरूप से दूर होती जा रही है। धार्मिक पर्यटन का बढ़ता बाजारीकरण आध्यात्मिकता को उपभोग संस्कृति में परिवर्तित कर रहा है, जिससे श्रद्धा का स्थान प्रदर्शन ले लिया है। इन परिस्थितियों में धार्मिक सहिष्णुता और संवाद की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखें तो शिक्षा, संवाद, नागरिकता आदि के साझा मूल्य सामाजिक समरसता के पुनर्निर्माण के लिए प्रमुख उपकरण हो सकते हैं। शिक्षा, विशेषकर मूल्य-आधारित शिक्षा, युवाओं में विवेक, सहिष्णुता और विविधता के प्रति सम्मान की भावना विकसित कर सकती है। धार्मिक संवाद मंचों के माध्यम से विभिन्न समुदायों के बीच पारस्परिक समझ और सहयोग की भावना बढ़ाई जा सकती है। नागरिकता के लोकतांत्रिक मूल्य यथा समानता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व धार्मिक भेदभाव से ऊपर उठकर एक साझा सामाजिक पहचान का निर्माण करते हैं। मीडिया, विश्वविद्यालय और सांस्कृतिक संस्थान इस दिशा में सेतु का कार्य कर सकते हैं। इस सबके अतिरिक्त स्थानीय समुदायों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है जो अपने स्तर पर पारंपरिक मेल-मिलाप, सामूहिक आयोजन और उत्सवों के माध्यम से समाज को जोड़ने का कार्य करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि काशी की प्राचीन धार्मिक समरसता की भावना को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित किया जाए जिससे कि यह नगर केवल आध्यात्मिकता का केंद्र ही नहीं बल्कि सह-अस्तित्व और सहिष्णुता का जीवंत उदाहरण बना रहे।

निष्कर्ष

काशी की धार्मिक संस्कृति और सामाजिक जीवन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि यहाँ की धार्मिक विविधता संघर्ष का कारण नहीं अपितु नगर की सामाजिक शक्ति और समरसता का आधार है। हजारों वर्षों से हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध, जैन और सिख परंपराएँ सह-अस्तित्व में रहीं हैं और इस विविधता ने काशी को धर्मनगरी एवं जीवित सभ्यता का प्रतीक बनाया है। गंगा तट पर स्थित मंदिर, मस्जिद, मठ और आश्रम केवल पूजा-साधना के केंद्र नहीं बल्कि सामाजिक एकता के साथ सामूहिक चेतना के स्थायी प्रतीक हैं। गंगा आरती, देव दीपावली, रामलीला, नागनाथैया और अन्य उत्सवों में भागीदारी केवल धार्मिक

अनुष्ठान नहीं बल्कि सामाजिक समरसता तथा सामूहिकता की अनुभूति का माध्यम है। साधु-संन्यासी परंपराएँ चाहे नागा, रामानंदी, औघड़ हों या निर्गुण संत परंपरा, समाज में नैतिक अनुशासन, सेवा और त्याग के माध्यम से सामूहिक एकता को प्रबल करती रही हैं। कबीर, रैदास, तुलसीदास जैसे संतों की शिक्षाएँ जाति और पंथ के भेद को तोड़कर समानता और सह-अस्तित्व की चेतना को समाज में व्याप्त करती हैं। यद्यपि कि आधुनिक युग में काशी को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। शहरीकरण, राजनीतिक ध्रुवीकरण और धार्मिक पर्यटन के बढ़ते बाजारीकरण ने पारंपरिक सहिष्णुता और सामाजिक ताने-बाने पर दबाव डाला है। पर्यटन और व्यावसायिक गतिविधियों के कारण धार्मिक स्थलों की पवित्रता प्रभावित हो रही है और कभी-कभी सामाजिक विभाजन की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इन परिस्थितियों में पारंपरिक सहिष्णुता के साथ ही आधुनिक नागरिक मूल्यों का संतुलित समन्वय आवश्यक है। सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने हेतु तीन प्रमुख उपाय प्रभावी हो सकते हैं यथा धार्मिक संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करना, शिक्षा प्रणाली में अंतरधार्मिक समझ और नागरिक मूल्यों को शामिल करना और गंगा घाटों, मंदिरों, मठों और अन्य सांस्कृतिक स्थलों का संरक्षण करना। समाजशास्त्रीय दृष्टि से धार्मिक सहिष्णुता केवल नैतिक आदर्श नहीं बल्कि सामाजिक स्थिरता और विकास की नींव है। यदि यह मूल्य व्यवहार में दृढ़ता से लागू किया जाए तो काशी न केवल भारत की धार्मिक राजधानी, बल्कि वैश्विक स्तर पर सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता का प्रेरक उदाहरण बन सकती है।

संदर्भ सूची

1. Weber M. The Sociology of Religion. Translated by Fischeff E. Boston: Beacon Press; 1963.
2. Durkheim É. The Elementary Forms of Religious Life. Translated by Fields KE. New York: Free Press; 1995. (Originally published 1912).
3. Mitra D. Knowledge systems and religious asceticism: A sociological study of Vaishnav sadhus in Kashi. Int J Sociol Humanit. 2025;7:1–6. doi:10.33545/26648679.2025.v7.i1a.126.
4. Mitra D. Religious tourism and ascetic integrity: A sociological study of economic dependency and sacred authenticity in Varanasi. J Res Humanit Soc Sci. 2025;13:72–80. doi:10.35629/9467-13077280.
5. Singh Y. Modernization of Indian Tradition. New Delhi: Rawat Publications; 1992.
6. Mitra D. Neo-Hinduism and the construction of Sanatan Dharma: Cultural continuity or political reinvention? J Res Humanit Soc Sci. 2025;13:510–514. doi:10.35629/9467-1306510514.
7. Bose NK. Culture and Society in India. Calcutta: K. L. Mukhopadhyay; 1967.
8. Mitra D. The ascetics of Kashi: A sociological exploration. Int J Sociol Humanit. 2025;7:257–267. doi:10.33545/26648679.2025.v7.i2d.208.
9. Mitra DP. Bhakti movement in Northern India: The case of Vaishnavism. Madhya Bharti. 2023;101–8.
10. Prasad R. Ganga-Jamuni Tehzeeb: Banaras ka Samajshastra. Varanasi: Banaras Hindu University Press; 2021.
11. Tripathi R. Kashi: Dharm aur Sanskriti ka Sangam. Varanasi: Chaukhamba Surbharati Prakashan; 2018.
12. Mitra D, Mitra V. काशी के घाटों का समाजशास्त्र. Int J Humanit Arts. 2025;7:105–110. doi:10.33545/26647699.2025.v7.i1b.127.